अभिलाषा

नवंबर २०२३

अभिलाषा

नवंबर संस्करण(२०२३)

हर सपना पूरा करने के लिए आत्म विश्वास होना जरूरी है,
और,
उस सपने को देखने के लिए हर युवा दिल मे एक अभिलाषा जरूरी है।

प्रतिष्ठाता संपादिका
अभिलिप्सा पाढ़ी

सह संपादिका
उत्कलिका राउत

अलंकरण - जूबून

संपादक की लेखनी से कुछ

दीपावली आलोक का पर्व है। इसी दिन भगवान राम माता सीता और भाई लक्ष्मण, हनुमान के साथ अयोध्या लौट आए थे। इस दिन पूरे अयोध्या वासी ने अयोध्या को दीप और रोशनी से आलोकित कर दिया था। दीपावली एक भारतीय पर्व है।

दीपावली को खुशियों का त्योहार कहा जाता है दीपावली को , रंग बिरंगी रंगोली और आलोक से सभी अपने - अपने घरों को सुसज्जित करते है। घर की साफ - सफाई करना मिठाई बनाना इन सब में घर की माँ, चाची, दादी माँ लग जाती हैं। भारत में मनाये जाने वाले सभी त्योहारों से यह पर्व बहुत खास होता है। कुछ लोग अपने वाहन और दुकान की भी पूजा करते हैं। दीपावली के पूर्व दिन धन तेरस होता है, इस दिन लक्ष्मी माता की पूजा होती है। सभी लोग कुछ न कुछ घर का सामान या आभूषण खरीदते हैं। बहुत सारी खुशियाँ लेकर आती है यह दीपावली।

सबको मेरा अनुरोध है की खुशियों के इस पर्व को खुशी से घर को सजा कर मिठाई बाँट कर मनाइए। पटाखा फोड़ कर अन्य जीव - जंतु को तकलीफ न पहुँचाइए। क्योकि परंपरा अनुसार दीपावली दीपों का पर्व है पटाखों का पर्व नहीं।

।।धन्यवाद।।

अभिलिप्सा पाढ़ी

मुख्य संपादक

सूचना

पत्रिका में लिखी गई सारि कविता और गल्प के लिए उसके लेखक लेखिका जिम्मेदार हैं।

पत्रिका में पाई गई व्याकरण गत त्रुटि के लिए संपादक और संपादिका क्षमा प्रार्थी।

अनुक्रम

1 कविता विभाग

महिला सशक्तिकरण-शिवानी पचौरी ६
बचपन - सत्यजित साहु ७
माँ - अब्दुल हुसैन एबी ८
हमसफ़र - वीरेंद्र जैन ९
एक लड़की है - लभरजित १०
मानव और बसंत - सुनीति साहू १२
हुनर आ गया है - ड़ः डी डी देसाई १३
कुछ तुम्हारी बातें - शर्मा मनु "मुसाफ़िर" १४
कोई तो हो - अना उज़्मा शमीम १५

2 कहानी विभाग

सत्तर लाख की ऑडी - दीपक सारंगी १७
सोहैला अब्दुल अली : एक अनकही कहानी - संजना चौधरी २०

कविता विभाग

महिला सशक्तिकरण

ऐसी दुनिया में जहां शक्ति और अनुग्रह आपस में जुड़े हुए हैं, महिलाएं उठती हैं, उनका हौसला चमकता है। सशक्तिकरण की लौ, एक प्रकाशस्तंभ, दिन-रात उनका मार्गदर्शन करना।

पुराने आदर्शों की जंजीरें तोड़ना, हर कदम के साथ, नए सौदे बनाते हुए ।
अब वे सीमित नहीं हैं, उनकी आवाजें ऊंची हैं, सशक्त महिलाएं, हमेशा के लिए।

उनके दिलों में इतना विशाल साहस है,
वे अतीत की छतें तोड़ देते हैं। उनके सपने असीमित हैं, वे अपनी जगह का दावा करते हैं, हर चेहरे पर सशक्तिकरण की चमक.

एकता में, वे ऊंचे और सच्चे खड़े हैं,
वे समान अधिकारों के लिए साहसपूर्वक आगे बढ़ते हैं। परिवर्तन की शक्ति, मानदंडों को तोड़कर, महिला सशक्तिकरण, कला का एक काम।।

शिवानी पचौरी
am_community_

बचपन

मुस्कान तो कभी आंसू कभी गुस्सा तो कभी खुशियों से भरा होता है ये बचपन,
फिर भी सबसे हसीन होता है ये बचपन।।
कभी नटखट कभी नादान कभी मस्ती तो कभी शैतान
होता है ये बचपन,
रंग बिरंगे रंगों से भरा हुआ ये बचपन।
कभी माँ गुस्सा करती फिर कभी लाड से गोदी में ले लेती
पापा की डांट पड़ती तो कभी भाई बहन में लड़ाई होती
फिर भी प्यार से भरपूर होता है ये बचपन,
अपने आप में संपूर्ण होता है ये बचपन।

सत्यजित साहु
बारिपदा

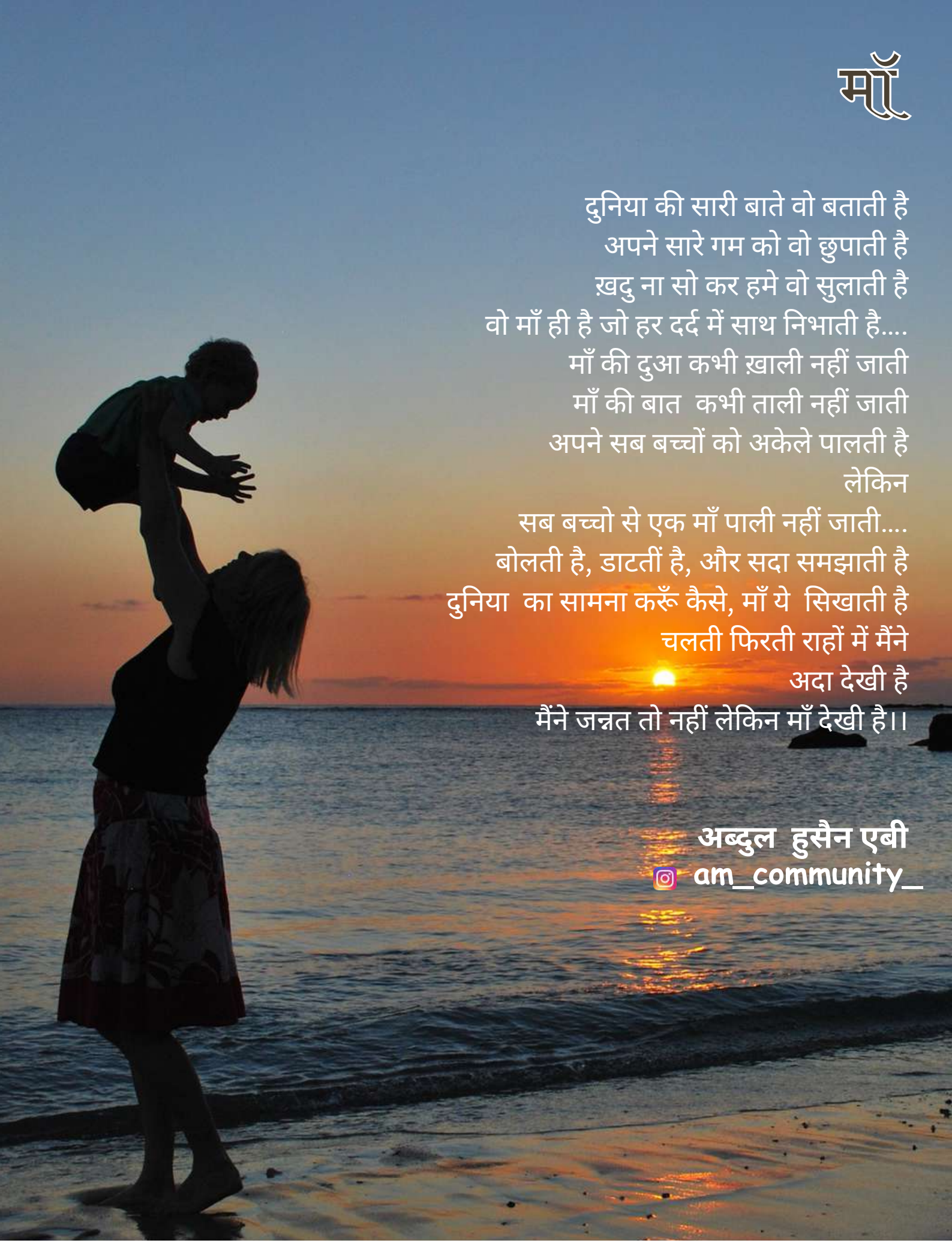

माँ

दुनिया की सारी बाते वो बताती है
अपने सारे गम को वो छुपाती है
ख़दु ना सो कर हमे वो सुलाती है
वो माँ ही है जो हर दर्द में साथ निभाती है....
माँ की दुआ कभी ख़ाली नहीं जाती
माँ की बात कभी ताली नहीं जाती
अपने सब बच्चों को अकेले पालती है
लेकिन
सब बच्चो से एक माँ पाली नहीं जाती....
बोलती है, डाटतीं है, और सदा समझाती है
दुनिया का सामना करूँ कैसे, माँ ये सिखाती है
चलती फिरती राहों में मैंने
अदा देखी है
मैंने जन्नत तो नहीं लेकिन माँ देखी है।।

अब्दुल हुसैन एबी
am_community_

हमसफ़र

साथ उसके जो बीते वो जिदंगी खूबसूरत हो,
मेरे गीतों के हर शब्दों में बस उसकी ही मूरत हो,
मेरी अंधेरी रातों में भोर की रौशनी हो वो,
उसका चेहरा मेरे जीवन का जैसे शुभ महूरत हो !
दिखें दो जिस्म पर दोनों में एक ही जान बसती हो,
दर्द हो एक को तो आखं दूजे की बरसती हो ,
रूठ जाए अग़र कोई तो
सिहरन रूह तक की हो,
दूरियां एक पल की भी
सजा सी जैसे कटती हो !!
दुआओं में जिसे मांगा वही जीवन में आया है,
कल्पना जैसी थी मेरी हमसफ़र वो ही पाया है,
ख्वाइशें करते है पूरी सभी
सुख देते हैं मझुको
मेरी पलकों पे है रहता उनकी पलकों का साया है!

वीरेंद्र जैन
नागपुर

am_community_

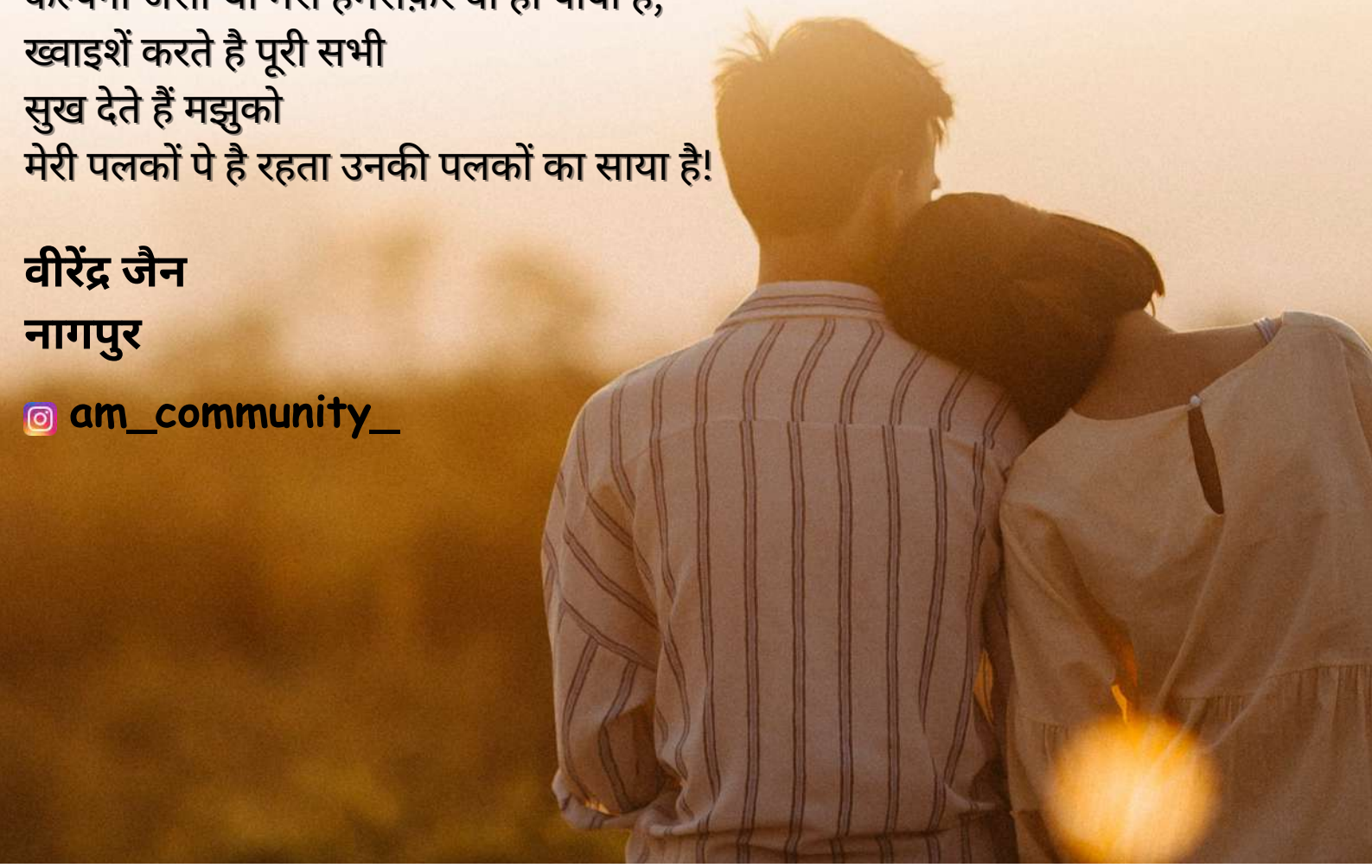

एक लड़की है

एक लड़की है ।
हसती है,खेलती है,
अपने हिस्से की हर एक खुशी तुमसे
बांटती है ।

बदले में हर जरूरत में तुम उसे ढूंढते
हो,
खुद को उसका अपना बताते हो ।

चलो सही है
खुदको उसका अपना जताते हो न तो
बताओ जरा !!
उसकी खामोशी जब चीख चीख के
अपना दर्द बयान करती है,क्या तुम
सुन पाते हो ?
जब उसके मुस्कान के पीछे दिल फुट
फुट कर रोता है,क्या तुम देख पाते हो
?
नहीं ना !!!

चलो सही है...
माना की किसी से कोई उमीद रखनी
नहीं चाहिए।
पर क्या करे वो भी तो इनसान है, उसे
भी समझने वाला कोई तो चाहिए !

क्या सचमे समय के बदलते सब बदल
जाते हैं ?

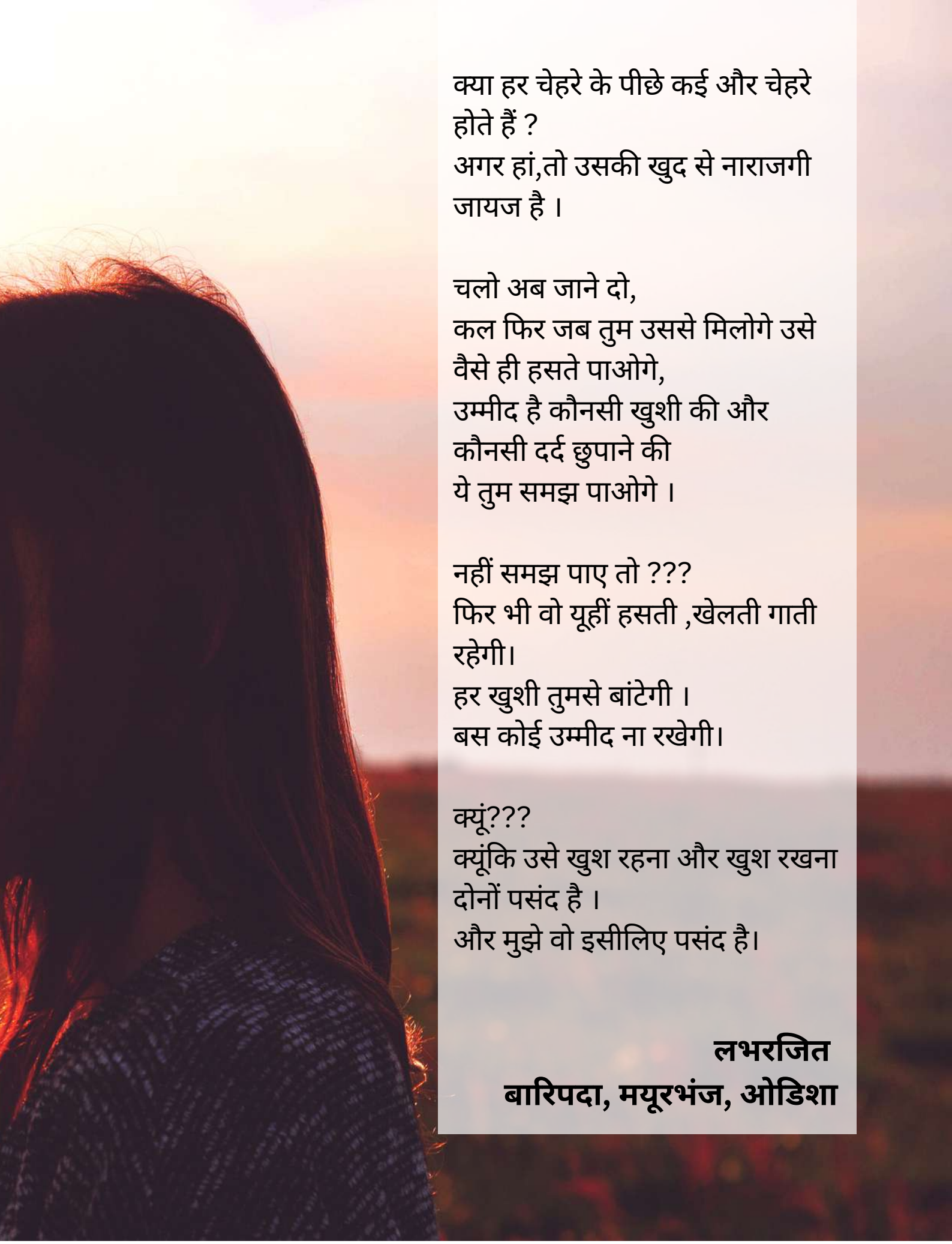

क्या हर चेहरे के पीछे कई और चेहरे
होते हैं ?
अगर हां,तो उसकी खुद से नाराजगी
जायज है ।

चलो अब जाने दो,
कल फिर जब तुम उससे मिलोगे उसे
वैसे ही हसते पाओगे,
उम्मीद है कौनसी खुशी की और
कौनसी दर्द छुपाने की
ये तुम समझ पाओगे ।

नहीं समझ पाए तो ???
फिर भी वो यूहीं हसती ,खेलती गाती
रहेगी।
हर खुशी तुमसे बांटेगी ।
बस कोई उम्मीद ना रखेगी।

क्यूं???
क्यूंकि उसे खुश रहना और खुश रखना
दोनों पसंद है ।
और मुझे वो इसीलिए पसंद है।

लभरजित
बारिपदा, मयूरभंज, ओडिशा

मानव और बसंत

पतझड़ आई और चली भी गयी
देखते देखते वो शुष्क तरु लताएं
नववधू की भांति सज भी गयी
मगर बसंत का वो उन्माद और
मदहोश पन कँहा रह गया
पतझड़ आई और चली भी गई
सच कहूं तो, वो बसंत अब रहा ही नहीं
वसंत का वह बावलापन, कोयल की माधुर्य गान
सिर्फ पेड़ पौधों को डस रहा
क्या मानव प्रकृति के वश में नहीं???

पतझड़ आई और चली भी गयी
सच कहूं तो वो बसंत अब रहा ही नहीं
पतझड़ की हलचल मानव महसूस करता रहा
मगर बसंत को अपनाने में वो इनकार करता गया
मानव के अंतिम पड़ाव में
पतझड़ बसंत को लेकर फिर वापस आया
क्या इस बार भी अबोध मानव
इस अभिप्राय को समझा ही नही???

हर बार पतझड़ एक नये रूप में
मानव में परिवर्तन करता रहा
मगर ये अबोध मनुष्य बसंत के साथ फासला करता गया
पतझड़ आई और चली भी गयी
सच कहूं तो वो बसंत अब रहा ही नहीं।।।।

सुनीति साहू

खड़ग आ गया है

जमाना बदल के भी जमाना हो गया है ।
कलाई में कँगन हाथों में खड़ग आ गया है ।
मत समझ कमजोर अधजली बाती को,
तूफानों में भी जलने का हुनर आ गया है ।
लाडली हो तुम लड़कपन है तुझमे,
गलत को सही बनाने का माद्दा है तुझमे ।
आम हो तो खामियाँ होना भी आम है,
आम को खास बनाने की खासियत है तुझमे ।
कुरुक्षेत्र में हो तुम खड़ी कौन अपना कौन पराया,
अब बुराई से लढ़ने का समय आ गया है ।
जमाना बदल के भी जमाना हो गया है..
तूफानों में भी जलने का हुनर आ गया है ।
कुलदीपक ना सही गृहलक्ष्मी तो हो तुम
घर परिवार ही नहीं देश चला सकती हो तुम ।
गया वह जमाना ज़ब तुम कुएं की मेंढ़क थी,
आज ख़ौलते महासागर की तैरक हो तुम ।
बाज़ सी नजर तुझमे में है जन्मजात....
अब बगुले सा मोती चुनना भी आ गया है ।
जमाना बदल के भी जमाना हो गया है..
तूफानों में भी जलने का हुनर आ गया है ।
धरती की गोद से आयी जनक नंदिनी हो तुम,
अंग्रेजों में दहशत मनिकार्णिका हो तुम ।
अँधे पति संग अपनी दुनिया अँधेरी कर दी तूने,
मरण से जीवन लाने वाली सती सावित्री हो तुम ।
बंदीशें हो या आजादी हो जीवन हो या संघर्ष..
अशोक वाटिका से निकलने का हुनर आ गया है,
जमाना बदल के भी जमाना हो गया है ।
कलाई में कँगन हाथों में खड़ग आ गया है ।
मत समझ कमजोर अधजली बाती को,
तूफानों में भी जलने का हुनर आ गया है ।

ड़ः डी डी देसाई
डी पी एच पी एस ट्रेनिंग कालेज, हैदराबाद

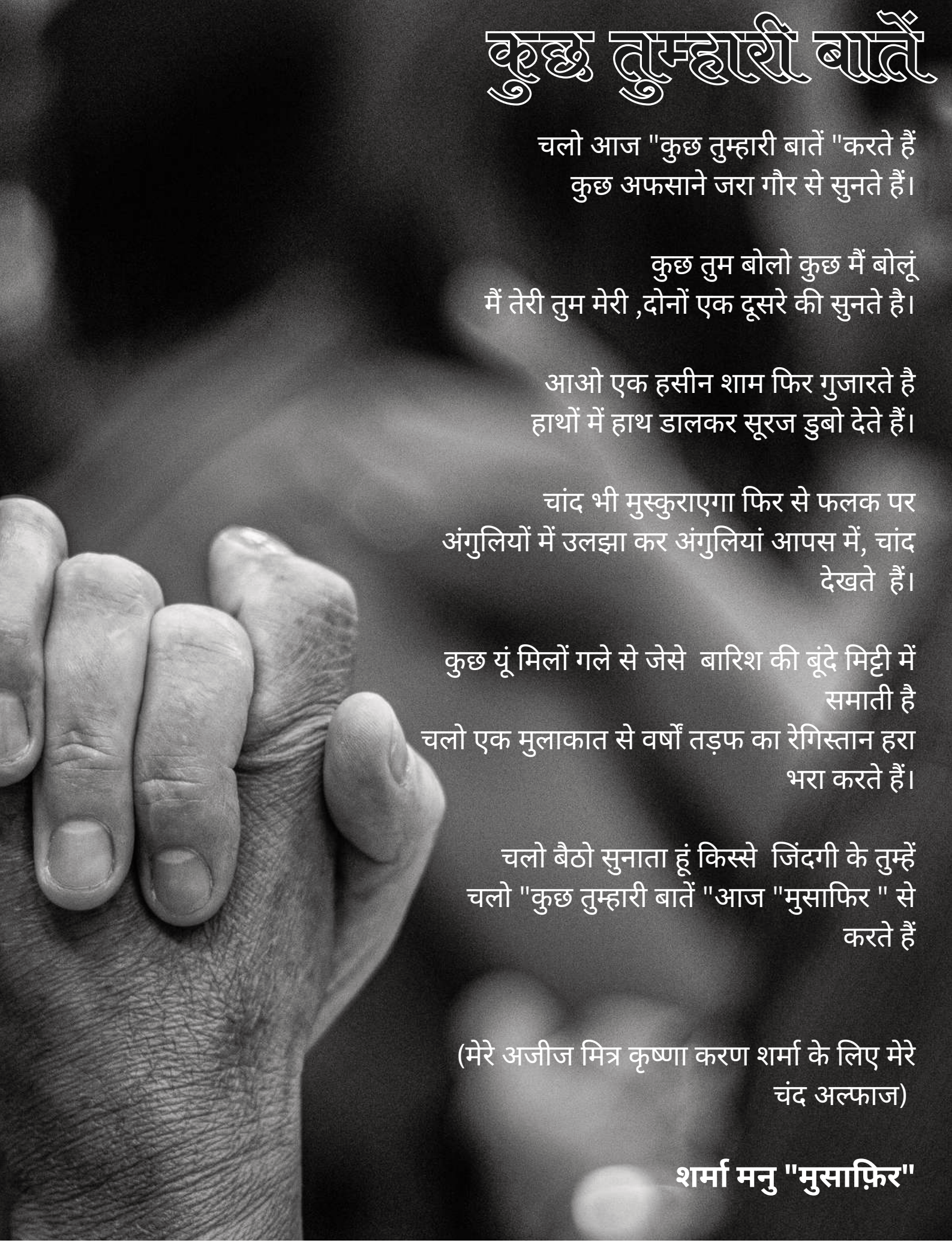

कुछ तुम्हारी बातें

चलो आज "कुछ तुम्हारी बातें "करते हैं
कुछ अफसाने जरा गौर से सुनते हैं।

कुछ तुम बोलो कुछ मैं बोलूं
मैं तेरी तुम मेरी ,दोनों एक दूसरे की सुनते है।

आओ एक हसीन शाम फिर गुजारते है
हाथों में हाथ डालकर सूरज डुबो देते हैं।

चांद भी मुस्कुराएगा फिर से फलक पर
अंगुलियों में उलझा कर अंगुलियां आपस में, चांद
देखते हैं।

कुछ यूं मिलों गले से जेसे बारिश की बूंदे मिट्टी में
समाती है
चलो एक मुलाकात से वर्षों तड़फ का रेगिस्तान हरा
भरा करते हैं।

चलो बैठो सुनाता हूं किस्से जिंदगी के तुम्हें
चलो "कुछ तुम्हारी बातें "आज "मुसाफिर " से
करते हैं

(मेरे अजीज मित्र कृष्णा करण शर्मा के लिए मेरे
चंद अल्फाज)

शर्मा मनु "मुसाफ़िर"

कोइ तो हो

सभी उलझानो से परे कोइ तो हो जो साथ चले।
जो मेरे संग बेठे आधी रात चांद तारो से भरे आसमान के तले कोइ तो हो जो मुझसे बातें करे।
चांद को देख कर मेरी तारीफे करे।
ओर रब से मेरे मिलने का शुक्रिया करे।
जो हाथ थामे रखे कभी ना जाने दे
सभी उलझनों से परे कोइ तो हो
जो मुझे हर बार चुने।
जिसके लिए मैं ही काफी रहु
बस मुझसे सच्चा प्यार करे।
कोइ तो हो जिसके कांधे पे सर रख कर मैं सुकून से सोजाया करु
वो मेरे केशू को हटाकर मुझे यू सुलाया करे।
मेरे होंठो पे हंसी सजाऐ रखे।
मुझे अपनी दुल्हन बनाऐ रखे।
बाजारो से चूड़ियां वो लाया करे।
उसके नाम का दुपट्टा लीए घुमती हू।
खबर ना उसको की मैं कितना उसे ढूंढती हु।
हां कोइ तो हो ऐसा मेरे ख्वाब जैसा।

अना उज़्मा शमीम
कोलकाता

कहानी बिभाग

सत्तर लाख की ऑडी

दीपक सारंगी

“ये क्या कर रही है ? सत्तर लाख की ऑडी कार है ऐ, मत छू उसे”। मालकिन की तागिद सुनकर रज्जो बाई डर गई। मालकिन की आँगन की सफाई करते वक़्त उनके घर के सामने रखी हुई ऑडी कार के मिरर को पकड़ कर अपने बिखरे हुए बालों को संवारते हुई रज्जो कभी सोचा भी नहीं था कि वो मालकिन की नज़र में आ जायेगी।

आज ही रज्जो ने इस नई मालकिन के घर पर काम करने आई है। बहुत बड़े अमीर आदमी है ये साहब। साहब का घर तो कोई राज महल से कम नहीं है।
हड़बड़ी में अपने फटी हुई साड़ी के आँचल में कार के शीशे को साफ कर रही रज्जो को फिर से मालकिन ने पीछे से बुलाया “ऐ रज्जो बाई! क्या कर रही हो ? दिमाग नाम की चीज़ कुछ है कि नहीं तेरे पास अपने मैले कपड़े में कार के शीशे को साफ कर रही है, अगर काँच में स्क्रैच मार्क आ गया तो कौन करेगा उसकी भरपाई ? जिंदगी मैं कभी इतनी महँगी गाड़ी देखी है ?” रज्जो की आँखें नम हो गयी अपने चेहरे पर थोड़ी - सी उदासी लाकर बोली “जी नहीं मेम साहब! मैंने इतनी महंगी गाड़ी कभी नहीं देखी और अगर देखी भी है तो क्या फर्क पड़ता हैं हम जैसे गरीब आदमी के लिए ये सब कुछ मायने नहीं रखते। अपना सिर झुका कर रज्जो ने कहा“मुझे माफ़ कर दीजिए मेम साहब! अब ऐसी गलती दोबारा नहीं होगी।

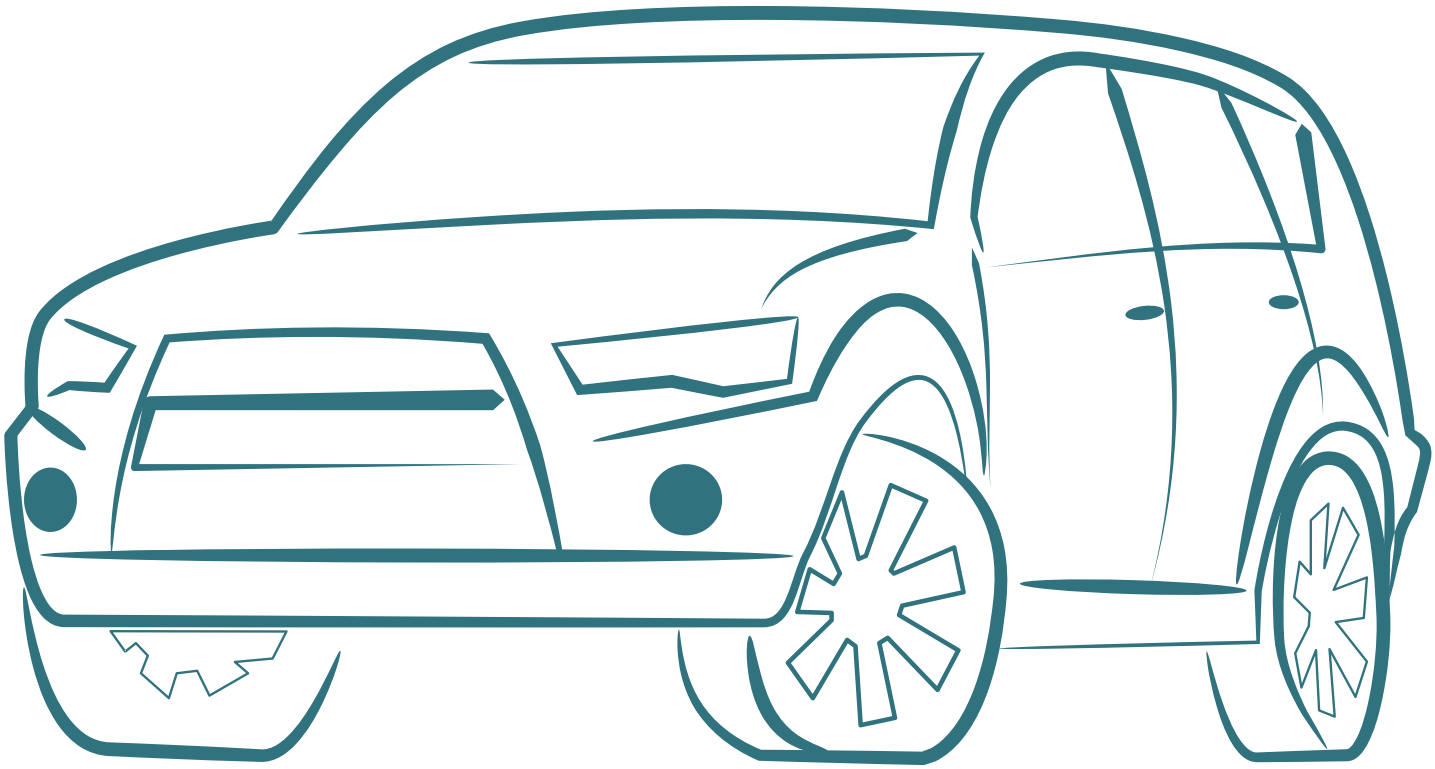

मालकिन अपनी गर्दन उठाकर उसके पास आ कर बोली “सुन! आज ड्राइवर नहीं आएगा। तू अपने हाथों में ग्लब्स डालकर डिटर्जेंट के पानी से गाड़ी को अच्छी तरह से सावधानीपूर्वक साफ कर दे। "रज्जो ने गाड़ी को साफ करते वक़्त वो देख रही थी मालिकन लॉन में बैठ कर अपने जर्मन शेफर्ड कुत्ते के साथ खेल रही है। मन ही मन रज्जो सोच रही थी कि ये सब पिछली जनम का पुण्य फल ही है, जरूर इसने कोई अच्छे काम किये होंगे तभी तो इतना सब ऐशो - आराम से इनकी ज़िन्दगी बीत रही है। अपने जैसे गरीब की किस्मत ही फूटी है। रोज किसी के बर्तन साफ करना, घर साफ करना यही सब करना पड़ता है। वह सोच रही थी कि काश रमेश के पास भी ऐसी ही एक गाड़ी होती तो वो भी उसमे बैठकर सैर करने जाती। ठीक उसी वक़्त घर के ऊपर मोहल्ले से साहब जी की आवाज़ आया “नेहा डार्लिंग! तुम्हारे नयी ऑडी के लिए कोई ड्राइवर का बंदोवस्त हुआ की नहीं ?” रज्जो ने देखा की साहब जी के गले में मोटे - मोटे सोने की चैन, उँगलियों में सोने और हीरों की अँगूठी। घर के अंदर की सजावट देख कर रज्जो की होश उड़ गए। इतने बड़े घर को झाड़ू - पोछा करने के लिए उसको बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। बड़े शहर में रहना है तो रमेश के साथ कंधे से कंधे मिला कर पैसा कमाना पड़ेगा।

कोरोना ने तब सब की कमर को तोड़ कर रख दिया है। रमेश को गाँव में ठीक से काम नहीं मिलता है इसलिए वो दोनों गाँव छोड़ कर यहाँ शहर में आ गए हैं। लोग कहते हैं कि इस बड़े मुंबई शहर में किसी का पेट खाली नहीं रहता। घर को पोछा मारते वक़्त वो मालकिन से पूछी “मेम साहब! मेरे आदमी को ना गाड़ी चलाना आता है। अगर आप चाहें तो हम दोनों एक साथ सुबह - सुबह यहीं पर आ जाते हैं। दो पैसे हाथ को आ जाते तो गृहस्थी भी ठीक से चलेगी। कुत्ते को अपने गोदी से नीचे उतर कर मालकिन ने बोली “तेरा आदमी कौन - सी गाड़ी चलाता है ?” रज्जो ने बोली “ऑटो रिकशा”। मालकिन हँस कर बोली “तेरा मर्द ऑटो चलाता है वो क्या ख़ाक चलाएगा ऑडी कार, बेकार की बातें मत किया कर, अपने काम में ध्यान दे कहाँ - कहाँ से आ जाते हैं ये अनपढ़ गँवार लोग मुंबई शहर मैं
मालकिन गुस्से में वहाँ से उठकर चली गयी। रज्जो का मन एक दम टूटकर बिखर गया। पास में खड़ा होकर ये सब देख रहा था माली गोपी। रज्जो को देख कर वो बोला “तू क्यों अपना दिल छोटा कर रही है ? इन अमीर लोगों के पास पैसे होने की वजह से बहुत घमंड है। इनके सामने हम जैसे गरीबों की कोई अहमियत नहीं है। पापी पेट की वजह से ये सब बातें सुन कर भी काम करना पड़ता है। इन सब बातों को अनसुना कर तू अपने काम पर ध्यान दे हम को चलना पड़ेगा।”

रज्जो ने रात को घर आकर रमेश को सब बात बताई। रमेश हँस कर बोला "हम गरीबों के लिए हमारा ऑटो रिक्शा, साईकिल उन लोगों के ऑडी कार से बहुत ही अच्छा है। उनका ऑडी उनके पास ही रहने दे और हमेशा याद रखना भगवान किसी के घमंड को सहन नहीं करते दोनों खा पीकर सो गए।

उसी रात बहुत जोर से बारिश शुरू हो गई। बारिश में मुंबई शहर की हालत कैसी होती है सभी को खूब पता है। इतनी जोर से बारिश हो रहा थी कि लग रहा था जैसे आसमान के सभी बादल मुंबई में ही बरस रहे हो। टीवी पर न्यूज़ देख कर रज्जो चौंक गयी। हर जगह पानी और बस पानी। लोगों के घर में पानी घुस कर हाल बेहाल कर दिया था। तभी रज्जो की नज़र अचानक से टीवी पर गयी। न्यूज़ में एक फोटो देखकर वह चिल्ला कर रमेश को बोली "अरे ये तो मेरी मेम साहब का घर है"। रमेश टीवी में देख रहा था मेम साहब के घर में बहुत पानी चला गया था। उनकी सत्तर लाख की ऑडी कार नाव की तरह बारिश के पानी में तैर रही थी। मेम साहब और उनके साहब दोनों बाहर खड़े थे। घर में पानी घुस जाने की वजह से घर का हर सामान गिला हो चुका था और इलेक्ट्रिक शार्ट सर्किट होने की वजह से कर पूरा घर चार्ज हो चुका था।तभी रज्जो ने रमेश को बोला "चलो हम जाकर मेम साहब की कुछ मदद करते हैं"। रमेश रज्जो को देख रहा था और उसने रज्जो से ज्यादा बात ना करके दोनों झट से निकल पड़े अपने ऑटो पर। बड़ी मुश्किल से दोनों मेम साहब के घर के सामने पहुँच गए। थज्जो को देख कर मेम साहब रो पड़ी बोली "हम कल रात से यहीं पर खड़े हैं। पूरा घर इलेक्ट्रिक चार्ज हो गया तो हम दोनों बाहर चले आये और रात भर यहीं खड़े होकर गुजार दिए हैं।

रज्जो बोली "आप मुझे और कुछ मत बोलिये। आप दोनों हमारे ऑटो में बैठ जाइये और मेरे साथ चलिए। हमारा चाल मुंबई के ऊपरी हिस्से में है जहाँ पर ज्यादा पानी जमा नहीं है। आप वहीं पर ठहर सकती हैं। जब तक हालात सुधर न जाएँ।" मेम साहब को देखकर साहब ने आँखों में इशारा कर दिया कि इसके अलावा उनके पास और कोई चारा भी नहीं है। दोनों जाकर रमेश के ऑटो में बैठ गए। रमेश का ऑटो भी पानी में भीग कर आया था तो स्टार्ट भी नहीं हो रहा था। रमेश बोला "साहब! अगर आप तीनो ऑटो को थोड़ा - सा धक्का लगा दें तो इंजन स्टार्ट हो जायेगा।" तीनो ने ऑटो से उतर कर ऑटो को धक्का लगाने के लिए उतरे तभी मेम साहब की सत्तर लाख की ऑडी पानी में तैर कर आकर उनके गेट के सामने पहुँच चुकी थी और रमेश ये सब देख के मन ही मन खुश हो कर गुनगुना रहा था "ओ माझी रे अपना किनारा नदिया की धारा है"।

सहकारी अध्यापक
रोलैंड फार्मेसी कॉलेज, ब्रह्मपुर, ओडिशा

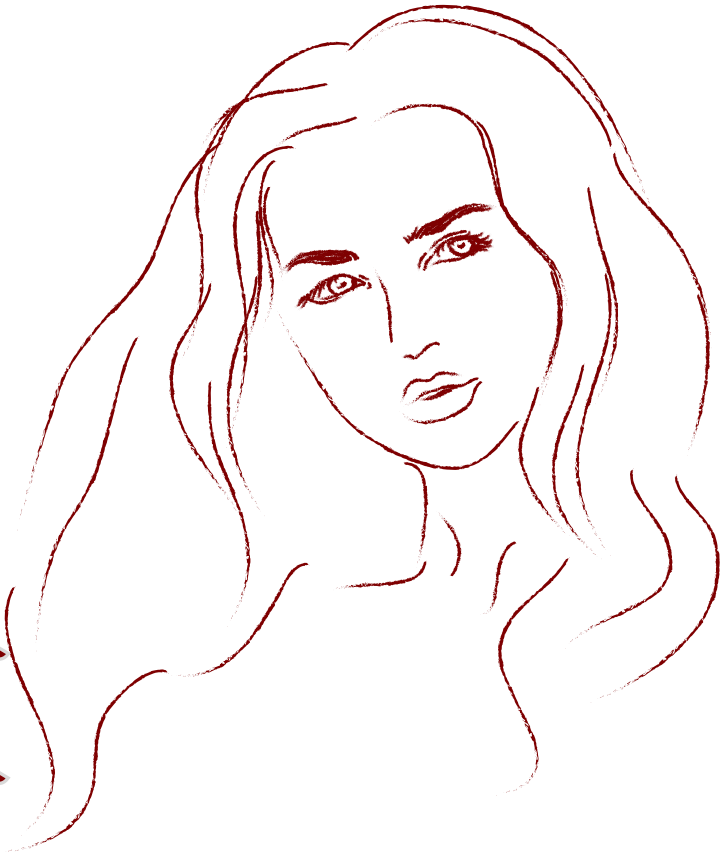

सोहैला अब्दुल अली
एक अनकही कहानी

संजना चौधरी

प्राचीन ऋग्वैदिक काल में पुरुषों और महिलाओं को समान दर्जा प्राप्त था। पहले महिलाओं को पुरुषों के साथ समानता का ऐसा स्तर प्राप्त था जो कभी भी पार नहीं किया गया। उन्होंने शिक्षा में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए "शास्त्रार्थ्र" नामक सार्वजनिक सभाओं में भाग लिया, वेदों का अध्ययन किया, भजन लिखें और बहुत कुछ किया। इस पूरे समय में पुरुषों और महिलाओं दोनों की स्वतंत्रता को स्वीकार किया गया और महत्व दिया गया। एक-दूसरे के प्रति सम्मान की अपेक्षा की जाती थी और विवाह को एक पवित्र संस्कार के रूप में देखा जाता था। बाल विवाह, सती प्रथा, बहुपति प्रथा आदि जैसी कोई चीज़ नहीं थी।

लेकिन इन ऐतिहासिक उदाहरणों के बावजूद, लगातार सांस्कृतिक पूर्वाग्रह आधुनिक समाज के लिए महिलाओं की सुरक्षा और स्वतंत्रता की गारंटी देना बेहद कठिन बना देते हैं। हमारी दुनिया अभी भी बलात्कार के मामलों और (कुछ क्षेत्रों में) एक विवाह जैसी समस्याओं से ग्रस्त है। असंख्य लोग इन अपराधों का शिकार बनते रहते हैं, जिसके परिणामस्वरूप आघात, चिंता, उदासी और अन्य समस्याएँ हो सकती हैं।

हमारे दृष्टिकोण दुनिया को प्रभावित करते हैं, और यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि कुछ भी आंतरिक रूप से अच्छा या बुरा नहीं है - बल्कि, हमारी धारणा इसे आकार देती है। फिर भी, किसी को उसकी इच्छा के विरुद्ध मजबूर करना निर्विवाद रूप से दुष्ट है। जब कोई मना करता है तो उसे बिना पूछताछ के स्वीकार कर लेना चाहिए। किसी भी प्रकार की जबरदस्ती, विशेषकर जब इसमें किसी को उसकी इच्छा के विरुद्ध धक्का देना शामिल हो, को पाप या आपराधिक अपराध माना जाना चाहिए।

हमारी संस्कृति में, दो प्रकार के लोग होते हैं: वे जो निडर होकर अपना बचाव करते हैं और दूसरे जो अपराध बोध, अपमान, या दोस्तों या परिवार की कमी के कारण चुप रहते हैं। इतिहास से अप्रत्याशित खुलासे अक्सर पीढ़ियों तक समाज पर लंबे समय तक प्रभाव डालते हैं। ऐसा ही एक साहसी व्यक्ति - एक 17 वर्षीय लड़की जो समाज में एक आदर्श मॉडल बन गई - इस लड़ाई से बाहर निकली। उन्होंने साहसपूर्वक अपने जीवन के लिए संघर्ष किया और जीत हासिल की, इस प्रक्रिया में बड़ी संख्या में अन्य लोगों को प्रेरणा मिली।

अमेरिका में हाई स्कूल से स्नातक होने के बाद, वह बंबई लौट आईं और एक शाम एक पुरुष परिचित के साथ टहलने गईं। दुखद बात यह है कि वह 1980 में सामूहिक बलात्कार का शिकार हो गईं। दोनों अपराधियों को अपना अपराध छिपाने के लिए राजी करते हुए एक लंबी और हिंसक रात में जीवित रहने में कामयाब रहे।

बलात्कार एक भयानक अपराध है जो अवर्णनीय पीड़ा का कारण बनता है, जिससे पीड़ित भयभीत, भयभीत और अक्सर निराश हो जाते हैं। इन अपराधों के ख़िलाफ़ पूरे समाज में कई प्रदर्शन हुए हैं। किसी त्रासदी के आने का इंतज़ार करने के बजाय, हमें ऐसी स्थितियों के घटित होने से पहले ही उनके ख़िलाफ़ बोलना चाहिए। अपने भयानक हमले के तीन साल बाद, एक भारतीय महिला सोहेला अब्दुलाली ने महिलाओं की पत्रिका मानुषी के लिए "आई फाइट फॉर माई लाइफ... एंड वोन" शीर्षक से एक लेख लिखा। अपने जीवन के लिए उनकी वास्तविक लड़ाई और महिलाओं के खिलाफ हिंसा के खिलाफ बोलने के लिए दूसरों को प्रोत्साहित करने के उनके प्रयास यहीं से शुरू हुए।

बलात्कार के विषय की अपनी खोज में, सोहेला अब्दुलाली ने पीड़ा के सामने पीड़ितों के लचीलेपन को दिखाया है। खलनायक और नायक, दंत चिकित्सक और सेना अधिकारी, प्रेमी और दुर्व्यवहार करने वाले दोनों को प्रस्तुत करके, वह भावनाओं की जटिलता को उजागर करती है। वह एक ऐसे अपराध की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए काम करती है जो इतना भयानक है कि यह अपने पीड़ितों को बर्बाद कर देता है फिर भी उसे कानून से उचित सजा नहीं मिलती है। लैटिन शब्द "रेपेरे" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "छीनना या ले जाना", "बलात्कार" शब्द में अपने आप में वजन है। बलपूर्वक उठाए जाने की कार्रवाई से इसका संबंध 700 वर्ष पुराना है।

आधुनिक दुनिया में इन विषयों से जुड़ी वर्जनाओं को तोड़ना महत्वपूर्ण है, जब बलात्कार, दुर्व्यवहार, छेड़छाड़, आत्महत्या और बेवजह हत्या की घटनाएँ अक्सर होती रहती हैं। हर दिन 88 लड़कियों के साथ बलात्कार होता है - जिनमें से कई शर्म के कारण रिपोर्ट नहीं की जाती हैं - आंकड़े परेशान करने वाले हैं। अपराधों को गंभीरता से नहीं लिया जा रहा है, जैसा कि इस तथ्य से पता चलता है कि अपराधी अभी भी बड़े पैमाने पर हैं और मामले अभी तक हल नहीं हुए हैं।

भारतीय समाज में लड़कियों द्वारा अनुभव की जाने वाली कठिनाइयों के बारे में बात करना नापसंद किया जाता है, खासकर जब वे छोटी होती हैं। जो माता-पिता केवल अपनी शैक्षणिक सफलता को प्राथमिकता देते हैं वे अपने बच्चों को सही यौन शिक्षा प्रदान करने में विफल रहते हैं। जब युवा लड़कों और लड़कियों को सहमति, स्वस्थ संबंधों और जीवन की चुनौतियों से निपटने के बारे में शिक्षित करने की बात आती है तो ज्ञान में बड़ा अंतर है।

वर्तमान भारतीय कानूनी व्यवस्था में बलात्कार की परिभाषा को संशोधित करना होगा। जनता को पुराने आपराधिक कानूनों के खिलाफ बोलने की जरूरत है जो वैवाहिक शोषण और यौन उत्पीड़न की जटिलता को नजरअंदाज करते हैं।

हालांकि सोहैला अब्दुलअली एक गुमनाम हीरो हैं, लेकिन एक बहादुर रोल मॉडल हैं। वह नारीवाद का प्रतीक है, समाज की अपेक्षाओं को धता बताती है और महिलाओं को अपराध के खिलाफ बोलने के लिए प्रोत्साहित करती है। समाज को उन लोगों की सक्रिय रूप से मदद करने की ज़रूरत है जो यौन उत्पीड़न से बच गए हैं ताकि उन पर शर्म का बोझ न पड़े। एक ऐसी दुनिया बनाने के लिए जो सभी के लिए अधिक सुरक्षित और न्यायपूर्ण हो, अब चुप्पी खत्म करने, अपने बच्चों को पढ़ाने और सभी पीड़ितों के लिए न्याय की मांग करने का समय आ गया है।